आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : चौथा | अगस्त–2013

4

मैं तो कृपाल से

(एक शब्द)

6

मौत से पहले मरना

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज
द्वारा एक संदेश

17

परमात्मा आपके अंदर है

(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(मुम्बई)

29

सवाल–जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

संपादक -

प्रेम प्रकाश छाबड़ा

मो. 0 99 50 55 66 71 (राजस्थान)

मो. 0 98 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक -

नन्दनी / माया रानी

विशेष सलाहकार -

गुरमेल सिंह नौरिया

मो. 0 99 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी -

ज्योति सरदाना

रेनू सचदेवा

सुमन आनन्द व

परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2013 –137– **मूल्य – पाँच रुपये**

मैं तो कृपाल से विछुड़ के रोई रे

मैं तो, कृपाल से विछुड़ के, रोई रे, *(2)*

1. *पीया से विछुड़ के, इस जग आई, दर–दर भटकी, ठोकर खाई,* *(2)*
बात ना पूछे कोई रे, *मैं तो कृपाल .....*

2. *बिन पीया के मैं, तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं, तरस रही हूँ,* *(2)*
बैरन दुनियां होई रे, *मैं तो कृपाल .....*

3. *आऊं–जाऊं, मैं दुःख पाऊं, विछुड़ पीया से, मैं पछताऊं,* *(2)*
काल देश में खोई रे, *मैं तो कृपाल .....*

4. *संग बसे मेरे, मैं क्या जानूं, मैं पगली, पिर ना पहचानूं,* *(2)*
कृपाल से बात ना होई रे, *मैं तो कृपाल .....*

5. *कोई ना जाने, देश पराया, तोर दित्ता मुड़, लैण ना आया,* *(2)*
ना जीवां ना मोई रे, *मैं तो कृपाल .....*

6. *भुल्ल गयों वे, तूं बेदर्दा, विछड़ां तैथों, दिल नहीं करदा,* *(2)*
कृपाल बगैर कित्थे ढोई रे, *मैं तो कृपाल .....*

7. *राह भुल्ल गई मैं, किस राह आंवां, आ के लै चल, तरले पांवां,* *(2)*
मुश्किल डाडी होई रे, *मैं तो कृपाल .....*

8. *कृपा करो, कृपाल सुनो रे, दाते दीन, दयाल सुनो रे,* *(2)*
मैं दुःखयारी रोई रे, *मैं तो कृपाल .....*

9. *मैं पापण नूं, गल नाल ला लै, अपने बेड़े, विच बिठा लै,* *(2)*
'अजायब' कृपाल दी होई रे, *मैं तो कृपाल .....*

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

मौत से पहले मरना

यह संसार अंधा है। आम आदमी का और एक उत्तम आदमी का इस संसार को देखने का दृष्टिकोण अलग होता है। उत्तम आदमी मन और इन्द्रियों से मुक्त हो चुका होता है, वह अपने आपको और परमात्मा को जान चुका होता है। आम आदमी इन्द्रियों के वश में होकर अपने आपकी पहचान शारीरिक तौर पर करते हैं। उनकी आत्मा यह नहीं जान पाती कि क्या मैं यह शरीर हूँ या शरीर को काबू में रखने वाली आत्मा हूँ? मैं घर हूँ या घर के अंदर रहने वाली आत्मा हूँ?

हमारी आँखें इस संसार को स्थूल इन्द्रियों से देखती हैं। बाहर का ज्ञान स्थूल इन्द्रियों से होता है क्योंकि सभी द्वार बाहर की तरफ खुलते हैं। इंसान यह नहीं जानता कि इससे ऊपर कैसे उठना है? अंदर की आँखें प्रकृति को देखने के लिए खुली हैं।

मौलाना रूम कहते हैं, ''हमें यह सीखना है कि किस तरह बाहर की दुकान बंद करके अंदर की दुकान खोलनी है। जिन्होंने ऐसा कर लिया है अंदर की सूक्ष्म आँख बना ली है वे शुद्धता से इस संसार को देखते हैं।''

कबीर साहब कहते है, ''यह संसार अंधे लोगों से भरा पड़ा है। जिनकी अंदर की आँख नहीं खुली वे अंधों की तरह ही हैं। पढ़े-लिखे या अनपढ़, अमीर या गरीब, मालिक या नौकर सब अंधे हैं ये किस तरह किसी दूसरे आदमी को रास्ता दिखा सकते हैं; निश्चित तौर पर दोनों ही खाई में गिरेंगे।''

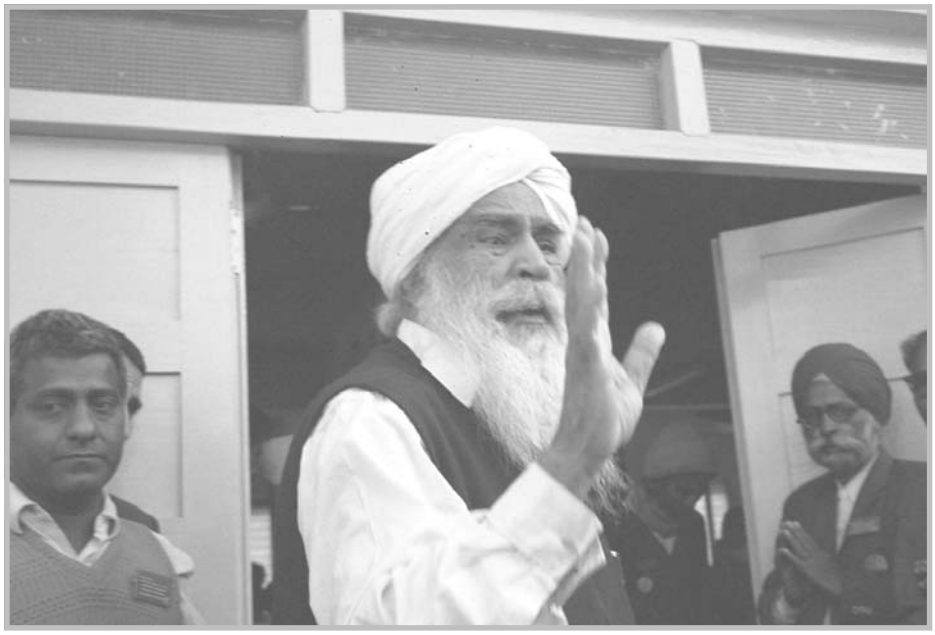

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''वह अंधा है जिसकी अंदर की आँखे परमात्मा को देखने के लिए नहीं खुली हैं। परमात्मा हर जीवात्मा में समाया हुआ है लेकिन वह बहुत सूक्ष्म है। हमारी आँखें स्थूल हैं इसलिए हम परमात्मा को नहीं देख सकते। परमात्मा बहुत ऊँचा है अगर हमारे अंदर परमात्मा को देखने की इच्छा हैं तो हमें भी परमात्मा जितना ऊँचा, सूक्ष्म और अगम बनना होगा।''

एक बार एक दयावान फकीर किसी गाँव में गया। उसके दिल में बहुत दया थी। उसने गाँव के लोगों को सावधान किया, ''कल ऐसी हवा चलेगी जिसे वह हवा छू जाएगी वह पागल हो जाएगा।'' जिन लोगों को उस फकीर की बात पर विश्वास था उन लोगों ने जब वह समय आया तो अपने घरों के दरवाजे बंद करके अपने आपको छिपा लिया लेकिन जिन लोगों ने फकीर की बात की तरफ ध्यान नहीं दिया वे उस हवा के संपर्क में आते ही पागल हो गए।

खुशकिस्मत लोग जब छिपे हुए घरों से बाहर आए तो उन्होंने देखा कि बहुत से लोग पागल हो गए हैं। पागल लोगों की संख्या ज्यादा थी। खुशकिस्मत लोगों को देखकर उन पागलों ने कहा, ''ये लोग पागल हैं।'' दुनिया की हालत भी इसी तरह की है। खुशकिस्मत लोग जिनकी आत्मा मन इन्द्रियों से आजाद हो चुकी है जिनकी अंदरूनी दृष्टि शुद्ध है वे परमात्मा को सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज़ में भी देखते हैं। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो सच को समझते हैं।

चाहे मजदूर है चाहे व्यापारी है अपने पेट के स्वार्थ के कारण सब भूल चुके हैं सबकी एक ही मंजिल पैसा बनाना है। यहाँ तक की जो आध्यात्मिक कार्यो को दिशा देते हैं, आत्मा को परमात्मा से मिलवाने की जिम्मेवारी लेते हैं उनकी भी यही मंजिल है।

कबीर साहब कहते हैं, ''इंसान तब तक जागता है जब तक मौत का देवता उसके सिर पर होता है। जब चिड़िया खेत चुग गई तो पछताने से क्या फायदा?'' यह दुःख की बात है कि जब सन्त इस संसार में आकर आत्माओं की मदद करते हैं उन्हें परमात्मा का रास्ता दिखाते हैं तो नास्तिक लोग उन्हें गलत रास्ते पर ले जाने के लिए दोष देते हैं।

जब गुरु नानक कसूर शहर में गए तो उनके कपड़े उतार दिए गए। जो लोग धार्मिक होने का दावा करते हैं वे दुनियावी लोगों से ज्यादा दुनियावी हैं। उनका एक ही उद्देश्य है खाओ पिओ और खुश रहो। ऐसे लोग जीवन की सच्चाई को कैसे समझ सकते हैं?

हवा घोड़ा है और आत्मा घुड़सवार है। जिस तरह बुलबुले के अंदर हवा ज्यादा देर तक नहीं रह सकती, हल्की सी हवा बुलबुले को दूर उड़ाकर ले जाती है वैसी ही हालत इंसान के जीवन की है। इंसान के शरीर में श्वास और आत्मा रहती है लेकिन जब आत्मा

निकल जाती है तो शरीर निर्जीव हो जाता है और इसे जल्दी श्मशान घाट ले जाया जाता है। ऐसा हम रोज अपनी आँखों से देखते हैं फिर भी दुनिया भ्रम में है।

हम सब जानते हैं कि सबको एक दिन जाना है। हम यहाँ बहुत थोड़े समय के लिए हैं। हम सब पर यह बारी आनी है। राजा-प्रजा, धर्मी-त्यागी सभी एक-एक करके जाएंगे। इस दुनिया में कोई भी स्थायी नहीं है आखिर सबने इस शरीर को छोड़ना है। इस न टलने वाली स्थिति का यही उपाय है कि अपनी मर्जी से शरीर को छोड़ना और ऊपरी मंडलों में जाना सीखें। जब हम रोज ऐसा करना सीख जाएंगे तो मौत के समय हमें कोई दर्द और डर नहीं होगा फिर हम सच्चे जीवन की निश्चित धारणा बना लेंगे।

क्राईस्ट ने कहा है, ''जब तक आदमी दोबारा जन्म न ले वह परमात्मा का राज्य नहीं ले सकता। जब हमारी साँसे खत्म हो जाएंगी बुलबुले की तरह यह शरीर भी खत्म हो जाएगा; वह समय किसी भी मिनट आ सकता है तो हमें क्या करना चाहिए? हमें जल्द से जल्द शरीर छोड़ने का विज्ञान सीखना चाहिए जिससे मौत का डर मिट जाएगा। हमारी आत्मा गहरी नींद में तैर रही है।''

पूरा संसार एक तेज बहाव वाली नदी जैसा है, जिसमें हमारी आत्मा बिना मदद के तैर रही है। इसे किसी तरह किनारा मिलना चाहिए नहीं तो यह डूब जाएगी। मन एक सागर है इसमें बहुत बड़ी बड़ी लहरें लगातार उठ रही हैं। इन लहरों के हिलने से हमारा मन काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से लहरा रहा है। कोई भी बिना पूर्ण गुरु के मन के सागर को पार नहीं कर सकता। जो गुरु की दया से अपने मन को काबू में कर लेता है वह अपने आपको और दूसरों को भी नष्ट होने से बचा लेता है।

हम जिसे बाहर ढूंढ़ते हैं वह हमारे अंदर है लेकिन हम अंधे इंसान की तरह हाथ में दीपक लेकर उसे बाहर ढूंढ़ रहे हैं। हम उसे कभी धार्मिक किताबों में कभी पहाड़ों की चोटियो पर कभी नदी के किनारों पर और कभी अभ्यास करके ढूंढ़ते हैं लेकिन सच्चाई से बेखबर रहते हैं। इन्द्रियों के घोड़े मन को मौज-मस्ती के मैदान में खींचते हैं, इंसान के पास समय नहीं है कि वह मुड़कर देखे कि परमात्मा उसके अंदर छिपा हुआ है जो उसके सबसे ज्यादा नज़दीक है।

एक बार मैं कानपुर में एक आदमी से मिला उसने मुझे बताया कि वह सच की खोज में पैदल चलकर गंगोत्री से कन्याकुमारी तक अमृत जल लेकर गया और वापसी में कन्याकुमारी से गंगोत्री आया लेकिन उसे वह नहीं मिला जिसे वह खोज रहा था। वस्तु कहीं है आप उसे कहीं और ढूंढ़ रहे हैं। कबीर साहब कहते हैंः

वस्तु कहीं ढूंढे कही कह विधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाईए जब भेदी लईए साथ।

वस्तु आपको तभी मिलेगी जब आप किसी ऐसे को पकड़ेंगे जो उसे जानता है। हम हमेशा गलत जगह ढूंढ़ते हैं। हमें यह विश्वास नहीं कि वह इसी शरीर में है। तुलसी साहब कहते हैंः

है घट में सूझत नाहीं लानत ऐसी जिंद।
तुलसी या संसार को भया मोतियाबिंद।

हमारी अंदरूनी आँख पर पर्दा है उसे किसी अनुभवी डाक्टर या पूर्ण गुरु की जरूरत है जो ऑपरेशन से उस पर्दे को हटा दे।

जब स्वामी राम तीर्थ लाहौर में रहते थे, एक शाम वह अपने घर से बाहर आए तो आपने देखा कि एक बूढ़ी औरत दीपक लेकर कुछ ढूंढ़ रही थी, आपने उससे पूछा, ''माँ! तुम क्या ढूंढ़ रही

हो?'' उसने कहा, ''बेटा! मेरी सुई गुम हो गई है, मैं उसे ढूंढ़ने की कोशिश कर रही हूँ।'' आप उसकी मदद करने लगे। कुछ समय व्यर्थ की खोज के बाद आपने उस माता से पूछा, ''माँ! तुम बताओ कि सुई कहाँ गिरी थी?'' उसने कहा, ''ओह! सुई तो मुझसे कमरे में गिरी थी।'' आपने कहा, ''माँ! फिर आप यहाँ पर सुई मिलने की आशा कैसे कर रही हैं?'' आत्मा हमारे शरीर में रहती है। हम इन्द्रियों की बढ़ती सीमा में परमात्मा को ढूंढ़ रहे हैं। कबीर साहब कहते हैंः

अग्नि लगी आकाश को झड़-झड़ पैण अंगियार।
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।

इच्छा की अग्नि संसार को निगल रही है। यह अग्नि छूत की बीमारी की तरह हर घर, हर समाज, हर शहर में फैल रही है। चाहे इंसान किसी भी समाज का हो वह जैसे लोगों का साथ रखेगा वैसा ही बन जाएगा। अगर आप दुनियावी आदमी का साथ रखेंगे तो दुनियावी रंग में रंग जाएंगे। अगर इंसान चुप बैठकर अपने अंदर देखे तो उसे किसी चीज़ के जलने का अहसास होगा। इच्छाओं की दबी हुई अग्नि किसी भी गहराई तक खा जाती है गुरु के ज्ञान से ही इससे बचा जा सकता है।

मौलाना रूम कहते हैं, ''दिल को उसका साथ लेना चाहिए जिसे दिल की हालत पता हो। हमें उस पेड़ के नीचे बैठना चाहिए जो खुशबू वाले फूलों से भरा हो और मीठी ठंडक दे सके।''

गुरु की मौजूदगी में मन स्थिर और शान्त हो जाता है अगर आप अपने आपको बचाना चाहते हैं तो केवल यही तरीका है। सतगुरु केवल ठंडक ही नहीं देते ज्ञान भी देते हैं। सच्चा ध्यान और धुन जीवन का गीत है जो सारी रचना को सहारा देता है। सच्चा

ज्ञान सतगुरु की दया से ही प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं आपको बचा नहीं सकती। भ्रम की अग्नि इन्द्रियों द्वारा हमला करती हैं। दुनियावी जीवन की चिंताऐ हमें सताती हैं क्योंकि हमें इस प्राकृतिक विज्ञान के बारे में कुछ नहीं पता।

जब गुरु नानकदेव जी दुनियावी जीवन को त्यागने की सोच रहे थे उस समय आपकी सास आपके दो बेटों को लेकर आई और आपसे कहने लगी, ''अगर तुम्हारा यही मकसद था तो तुम इन दोनों को इस दुनिया में क्यों लेकर आए?'' गुरु नानक जी ने कहा, ''माता! मैं दुनिया को उसी कैद से आजाद करने के लिए इस संसार में आया हूँ जिस कैद में तुम मुझे बांधने की कोशिश कर रही हो। जो आग दुनिया को खा रही है मैं उसी आग को बुझाने के लिए आया हूँ।''

फिर गुरु नानकदेव जी परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, ''हे परमात्मा! अपनी दया से आप इस दुनिया को भस्म होने से बचाएं। इन्द्रियों के अनुभव केवल दुःख ही दे सकते हैं। मैंने शारीरिक रूप से कोई इंसान सुखी नहीं देखा सभी दुखी हैं।''

गुरु आत्माओं को जगाने के लिए अपने ऊपर भार लेते हैं। उनके दिल में पापियों के लिए भी सच्चा प्रेम होता है। पापी हो या पुन्नी बेहतर बनने का मौका सबके लिए है। हमें आज्ञाकार होकर भक्ति करनी चाहिए और बाकी काम परमात्मा पर छोड़ देना चाहिए। जो प्यार करना नहीं जानते वे कभी परमात्मा को नहीं समझ सकते क्योंकि परमात्मा प्रेम है।

हमें यह समझना चाहिए कि अन्त में हमें सब कुछ छोड़ना पड़ेगा अगर हम जीवन की सच्ची पहचान कर लें तो हमारे देखने

का नजरिया बदल जाएगा। यह मौका फिर वापिस नहीं आएगा। हमने शारीरिक रूप से ऊपर उठकर मन और इन्द्रियों से आजाद होना है। दुनियावी मस्तियों में अपना जीवन बर्बाद करने का यह परिणाम होगा कि आपको बार-बार इस दुनिया में किसी न किसी रूप में आना होगा; शरीर छोड़ना कोई झूठा डर नहीं है।

जहाँ आसा तहाँ वासा।

एक राज्य की कहानी है कि वहाँ के लोग पाँच साल के बाद नया राजा चुनते थे। पाँच साल तक राजा की हर बात मानी जाती थी लेकिन शासनकाल के अंत में लोग उस राजा को जंगली जानवरों वाले घने जंगल में छोड़ आते थे। जिस दिन राजा चुना जाता वह अपनी किस्मत पर खुश होता मगर पाँच साल खत्म होने पर वह बहुत शोक मनाता। बहुत से राजा अपनी बारी से आए और गए।

जब एक दिन एक आदमी को राजा चुना गया। उसने गंभीरता से सोचा कि पाँच साल बाद मेरा क्या होगा? वह बड़े ज्ञान वाला और गंभीर आदमी था उसे अपने भविष्य की चिन्ता थी। बहुत ध्यानपूर्वक सोचने के बाद उसने चुपचाप कुछ कर्मचारियों को जंगल में भेजकर जमीन साफ करवाई। वहाँ सुंदर ईमारत बनवाकर उस जगह को सुख देने वाली जगह बना लिया।

जब पाँच साल खत्म हुए तो उसे गद्दी छोड़ने के लिए कहा गया। वह हँसकर बोला, ''हाँ चलो।'' लोग बड़े आश्चर्य चकित हुए और उससे पूछा कि वह खुश क्यों है? उसने कहा, ''मैंने पहले ही अपनी मंजिल तैयार कर ली है और वहाँ का अधिकार भी ले लिया है। मुझे वहाँ जाने का क्या डर है क्योंकि मुझे वहाँ ज्यादा आराम मिलेगा यहाँ मेरे ऊपर बहुत जिम्मेवारियाँ थी।''

इंसानी जामा एक सुनहरी मौका है। हमें इस जामें से फायदा उठाना चाहिए और तैयारी करनी चाहिए क्योंकि वह दिन आ जाएगा जिस दिन हमें जाना होगा। न सदा कोई जीवित रहा है न कोई जीवित रहेगा अगर हम **मौत से पहले मरना** सीख लें जिसे जीते जी मरना भी कहते हैं तो यह अनुभव हमें हमारे आने वाले घर से मिलवाएगा जहाँ खुशी और शान्ति होगी; वहाँ मौत का डर नहीं होगा। केवल कुछ ही लोग सच्चा जीवन जीते हैं जो गुरु के आशिर्वाद में रहते हुए मरता है वह अपनी इच्छा के रहस्य को सुलझा लेता है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आपको सुनहरी मौका मिला है हमारा काम सिर्फ खाना, पीना और अपने शरीर की देखभाल करना ही नहीं। एक और भी काम है जिसके बारे में हम नहीं सोचते ।'' हमारी हालत उस कबूतर जैसी है जो बिल्ली को देखकर आँखें बंद कर लेता है। हम शरीर नहीं, शरीर को चलाने वाले हैं।

जब मौलाना रूम बहुत बीमार पड़ गए उस समय बहुत से लोग उनके सिरहाने खड़े होकर प्रार्थना करने लगे कि वह और जिएं। मौलाना रूम ने आँखे खोली और कहा, ''भाईयो! आपको इस प्रार्थना से फायदा हो सकता है लेकिन क्या आप नहीं चाहते कि जो पर्दा मुझे परमात्मा से अलग करता है वह हट जाए और मैं हमेशा उसके साथ हो जाऊं।'' जिनकी अंदरूनी आँखें खुली होती है उनके शब्द ऐसे ही होते हैं।

हम बाहर देख सकते हैं लेकिन हमारी अंदरूनी आँखें बंद हैं क्या हम अंधे नहीं? हमारे बाहरी कान खुले हैं लेकिन अंदरूनी धुन के लिए हम बहरे हैं। मंडलो के संगीत का रस हमारे अंदर बह रहा है लेकिन हम दुनिया के रस के नशे में हैं।

शमस तबरेज कहते हैं, ''मैंने जन्म से अंधे हजारों लोगों को नाम दिया है जिनकी आँखें परमात्मा को देखती हैं और वे खुशी से बताते हैं कि वे अंदर सूरज को उगते हुए देखते हैं। अगर आप अंदर देख सकते हैं फिर चाहे बाहर की आंखें काम करें या नहीं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।''

यह बदकिस्मती की बात है कि बहुत कम लोगों ने इस विज्ञान को समझा है। यह विज्ञान सभी विज्ञानों से पुराना है लेकिन इंसान इसे भूल गया है। सन्त जब भी आते हैं वे पुराने को ही नया कर देते हैं। जब वे चले जाते हैं और जब तक दूसरा गुरु नहीं आता इंसान उनकी शिक्षा को भूल जाता है। संसार कभी भी पूर्ण गुरु के बिना नहीं रहता। माँग और पूर्ति का नियम सदा कायम रहता है। भूखे को रोटी और प्यासे को पानी हमेशा मिलता है, जब शिष्य तैयार होता है गुरु आता है।

***

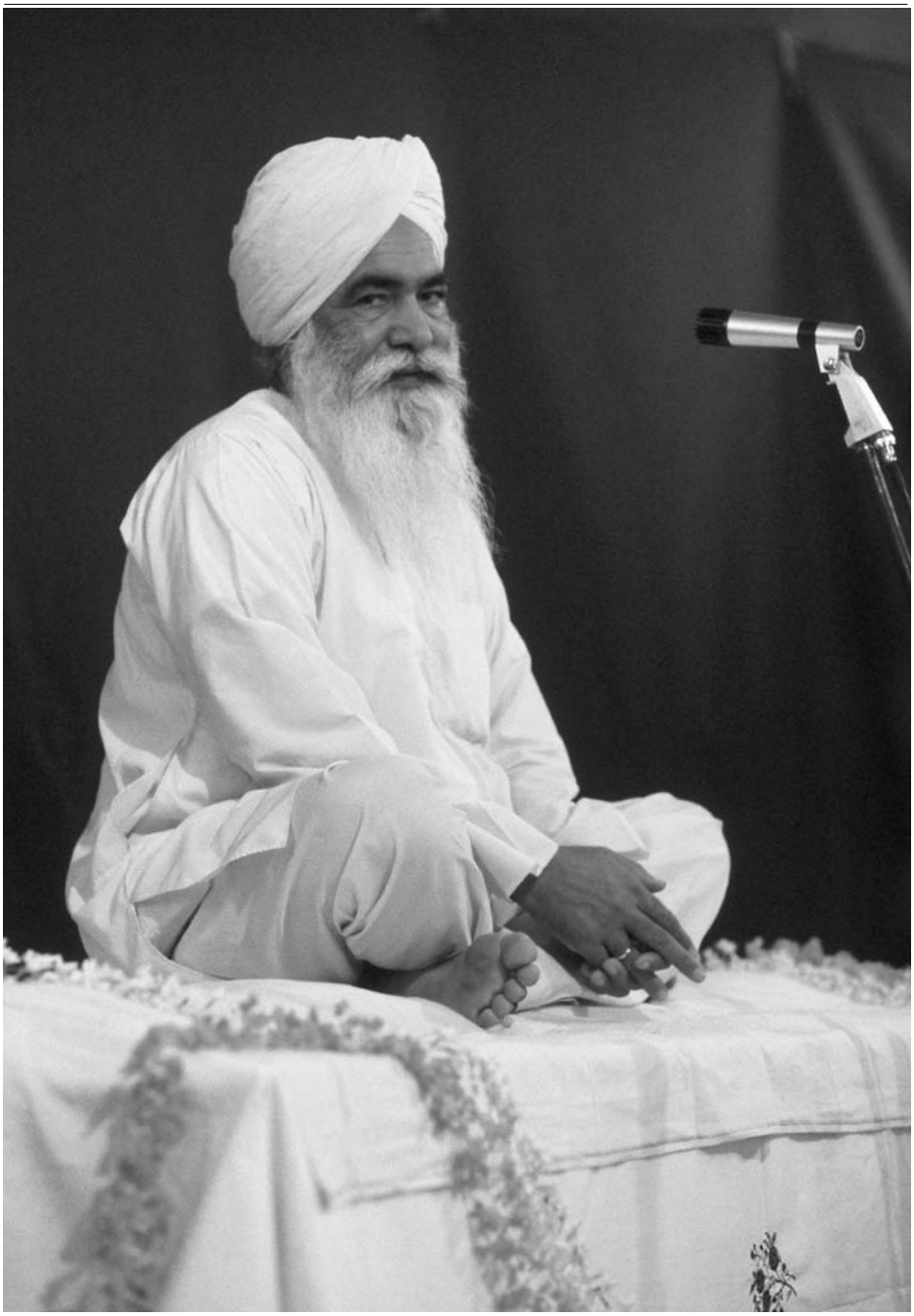

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा आपके अंदर है

स्वामी जी महाराज की बानी | मुम्बई

परमात्मा ने सच्चाई इंसान के अंदर रखी है। महात्मा पीपा अपनी बानी में लिखते हैं :

जो ब्रह्मांडे सोई पिंडे जो खोजे सो पाए।
पीपा परम व परम तत्व है सतगुरु दिए लखाए।

आप जो कुछ इन आँखों से देखते हैं वह परमात्मा ने आपके अंदर भी रखा हुआ है। किसी महात्मा ने हमारे शरीर को नौं दरवाजों वाला तो किसी ने दस दरवाजों वाला कहकर बयान किया है। नौं दरवाजे - दो आँखें, दो कान, दो नाक के सुराख, एक मुँह और दो नीचे की इन्द्रियों के सुराख हैं; ये संसार की तरफ खुलते हैं। न दिखाई देने वाला दसवाँ दरवाजा अंदर की तरफ खुलता है। हम दसवें दरवाजे पर सन्त-महात्माओं की बताई हुई युक्ति के मुताबिक खोज करके उनकी दया से ही पहुँच सकते हैं।

हमें जिस परमात्मा की विरह, तड़प और तलाश है, वह परमात्मा जंगलों, पहाड़ो या किसी धर्मग्रन्थ में नहीं बैठा, **परमात्मा आपके अंदर है**। धर्मग्रन्थ परमात्मा से मिलने के फायदे, उससे मिलाप करने का सुख बताते हैं। जिसने जिंदगी में अपना मसला हल कर लिया हो वह हमारा मसला भी हल करवा सकता है।

जिस तरह पहलवान पहलवानी सिखा सकता है, पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है। उसी तरह जिसने अंदर जाकर परमात्मा को प्राप्त कर लिया है परमात्मा रूप हो गया है उसने अपना आप खत्म करके परमात्मा को जगा लिया है; अब वह नहीं बोलता उसके अंदर परमात्मा बोलता है।

महात्मा हमें बताते हैं कि **परमात्मा आपके अंदर है**। हमने किस तरह परमात्मा की खोज करनी है क्योंकि इस शरीर की बारह मंजिले और दस दरवाजे हैं। छह मंजिले तीसरे तिल तक पूरी हो जाती है। सन्त यहाँ से अपना सफर शुरू करते हैं लेकिन यह योगियों की आखिरी मंजिल है। योगी अपने सेवकों को मूल चक्र से शरीर के अंदर दाखिल होने की युक्ति बताते हैं, योगी प्राणायाम को अपनाते हैं।

श्वास की क्रिया को काबू करने को प्राणायाम कहते हैं। यहां किलियन मंत्र का जाप किया जाता है। कोई दस हजार मंत्र का तो कोई करोड़ मंत्र का जाप करता है। यहाँ पृथ्वी का तत्व है लाल रंग है। जब हम यहाँ दाखिल होते हैं तो हमें रिद्धि-सिद्धि प्राप्त हो जाती है। दुनिया वाह! वाह! करती है लेकिन इस चक्र में दाखिल हो जाने का रूहानियत से कोई संबंध नहीं है।

मूल चक्र का मालिक हाथी के सिर वाला गणेश है। आम हिन्दुओं में रिवाज है कि गणेश की पूजा करने से सारे मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे। पिछले वक्त में लोग बहुत अभ्यास करके यहाँ पहुँचते थे। रिद्धियां-सिद्धियां हासिल करते थे लेकिन आज अगर किसी ने दुकान खोलनी है ज्यादा से ज्यादा लोग मोली बांधकर ही यह काम पूरा कर लेते हैं। जब दुकान में घाटा पड़ जाता है तो कहते हैं कि गणेश की पूजा तो की थी लेकिन घाटा पड़ गया। सन्त कहते हैं क्या आप गणेश के पास पहुँचे? सन्त-महात्मा अपने सेवकों को इस थका देने वाले साधन प्राणायाम में नहीं फँसाते।

आगे इन्द्री चक्र है यहाँ के मालिक ब्रह्मा और सावित्रि हैं, इनका काम संसार की उत्पति करना है। इस चक्र पर भी ओंकार शब्द का जाप करते हैं। यहाँ त्रिकुटी का मालिक ब्रह्मा नहीं न ही

ये वह ओंकार शब्द है जो नामदान के समय सतसंगियों को बताया जाता है। यहाँ पानी का तत्व प्रबल है।

इसी तरह नाभि चक्र है, इसके मालिक विष्णु और उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी है। यहाँ श्री मंत्र का जाप किया जाता है। यह लोगों का अपना-अपना कोर्स होता है कोई दस हजार मंत्र का, कोई बीस हजार तो कोई इससे भी ज्यादा करता है। विष्णु का काम दुनिया की पालना करना है, रोजी पहुँचाना है।

आगे हृदय चक्र है, इस चक्र के मालिक शिव और पार्वती हैं। इनका काम जीवों का संहार करना है। बेशक कोई इन्हें पूजे, माने या न माने इनका काम हर जीव का संहार करना है। इसे मौत का देवता कहकर भी बयान करते हैं। इस चक्र को पार करने के लिए बहुत सारे मंत्रों का जाप करना पड़ता है।

कंठ में जो शक्ति बैठी है उसे दुर्गा शक्ति कहकर बयान करते हैं। दुर्गा ब्रह्मा, विष्णु और शिव की माता है, ये तीनों शिरोमणि देवता इससे ताकत लेते हैं लेकिन हमारे मन और आत्मा की सीट आज्ञाचक्र पर है। सन्त-महात्मा अपने सेवकों को इससे नीचे नहीं जाने देते बल्कि इस जगह से उनका सफर शुरू करते हैं।

मैंने राजस्थान में काफी योगाभ्यास का कार्यक्रम चलता देखा है। मैंने खुद भी योगाभ्यास किया है लेकिन इसका आत्मा की शान्ति और सच्चखंड जाने से कोई ताल्लुक नहीं है। योगाभ्यास करने से रिद्धियां-सिद्धियां जरूर प्राप्त हो जाती हैं। दुनिया पूजने लग जाती है, वाह! वाह! करने लग जाती है। यह अपने साथ और दुनिया के साथ भी धोखा करने के बराबर है।

सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि तीसरे तिल से ऊपर पाँच मंजिले हैं। सन्त नामदान के समय हमें उन मंजिलों के बारे में पूरी

तरह समझा देते हैं। सन्त हमें सुना-सुनाया या धर्मपुस्तकों में से पढ़ा हुआ सिमरन नहीं देते, अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं। उस सिमरन के पीछे उनकी ताकत काम करती है। सन्त हमें सच्चाई बताना अपना फर्ज समझते हैं क्योंकि परमात्मा ने सन्तों को संसार में सच्चाई बताने के लिए ही भेजा होता है। पल्टू साहब कहते हैं:

उन्हें क्या है चाह फिरत हैं मुल्क बथेरा।
जीव तारन कारणे सहंदे दुख बथेरा।

सन्त हमें जो सिमरन देते हैं ये पाँच विशाल मंडलों के नाम हैं बेशक गुरु सदा साथ होता है फिर भी जब हम अंदर जाएंगे उन जगहों से गुजरेंगे तो खुद ही पता लग जाएगा इसलिए सन्त पाँचो मंडलों की रोशनियां के नाम भी बताते हैं और यह भी बताते हैं कि सिमरन हमें सूरज, चंद्रमा, सितारों को पार करके गुरु स्वरूप तक ही पहुँचाता है। जब हमारे अंदर गुरु स्वरूप प्रकट हो जाता है तो शिष्य सतगुरु का पूरा शिष्य बन जाता है। आगे गुरु की ड्यूटी है कि वह एक मंडल से दूसरा मंडल पार करवाता है। आत्मा इससे आगे का सफर 'शब्द' के जरिए ही पार कर सकती है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आपके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक है तो आप अपने दस दरवाजों वाले शरीर में दाखिल होकर खोज करें। **परमात्मा आपके अंदर है**, आप जब खोज करेंगे तो जिस सतगुरु ने आपको नाम दिया है वह आपके ऊपर जरूर दया करेगा। हमारी हिम्मत और गुरु की दया दोनों बराबर चलती हैं।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

शब्द खुलेगा गुरु मेहर से खींचे सुरत गुरु बलवान।

मैंने जितने भी नीचे के चक्रों का बयान किया है इनमें कमाल की अंतर्यामता, विल पावर होती है अगर हम अभ्यास करते हैं

तवज्जो देकर ख्याल करें कि चलती ट्रेन रूक जाए! तो वह ट्रेन एक इंच भी आगे नहीं जा सकती। हम जब तक नीचे के चक्रों का अभ्यास करते हैं तब तक हम इन चीजों को बहुत ऊँचा समझते हैं।

मेरा जातिय तजुर्बा है कि पहले मेरे पास बहुत लोग आते रहे बेशक सौ या हजार लोग हों मैं जब ख्याल करता तो सब लोग जमीन पर इस तरह लेट जाते जैसे मुर्दे होते हैं। कई लोग अपने दिल में घमंड करके आते कि ऐसी कौन सी ताकत है जिससे वह खड़े हुए इंसान को भी गिरा देता है। उन्हें तभी पता लगता जब वे आते ही जमीन पर गिर जाते। लड़कियां खिलौनों के साथ तब तक ही खेलती है जब तक उनकी शादी नहीं हो जाती। जब शादी हो जाती है लड़की का दिल पति के चरणों में लग जाता है फिर कौन गुड्डी पटोलों को संभालकर रखता है?

हमें जब ऊपर के मंडलों का भेद मिल जाता है, पूरा गुरु मिल जाता है तब हम इन चीज़ों को तुच्छ समझते हैं फिर हम कभी भी इनकी तरफ तवज्जों नहीं देते। आज भी मुझे हजारों आदमी मिलते हैं जिन्होंने वे नज़ारे देखे थे। वे कहते हैं कि बाबा जी! अब आप ऐसा कुछ नहीं करते। मैं हँसकर कहता हूँ कि अब मैं स्याना हो गया हूँ क्योंकि अब मुझे स्याना गुरु मिल गया है।

खोज री पिया को निज घट में,खोज री पिया को निज घट में।
जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको मत जग में।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हे आत्माओं! अगर आप परमात्मा से मिलना चाहती हैं तो दुनिया को बड़ा न समझें, परमात्मा को बड़ा समझें। दुनिया का डर बाद में परमात्मा का डर पहले समझें।'' मैं कहा करता हूँ कि कई बार ऐसा होता है कि हम

दुनिया से डरते हुए भक्ति छोड़ देते हैं। जो आदमी दुनिया से डरता है वह आधा मरा हुआ तो पहले ही होता है वह परमात्मा की भक्ति क्या करेगा? वह दिल से कमजोर होता है और आशिकों की नकल करता है; आशिक बनना बहुत मुश्किल होता है।

जब परम पिता शब्द कृपाल ने तीसरे दिन शारीरिक तौर पर गुफा में दाखिल होकर मेरी आत्मा को ऊपर खींचा, उस समय आपने यही कहाः

चलो नीं सईयो रण वेखण चलिए, जित्थे आशिक सूली चढ़दे।
चढ़दे चढ़दे करण कलोलां, मौतों मूल न डरदे।

उस समय जो सेवक मेरे पास रहता था उसने बताया कि जब महाराज जी आए आप सूरज की तरह चमक रहे थे। आपने यही कहा, ''मुझे खुशी है कि एक तो पास हुआ।'' सन्तों को तब खुशी होती है जब उनका शिष्य मन-इन्द्रियों की गुलामी से आजादी प्राप्त कर लेता है।

तीर्थ व्रत कर्म अचारा ये अटकावें मग में।

आप कहते हैं कि लोग मुक्ति प्राप्त करने के लिए तीर्थों पर जाकर स्नान, व्रत, संयम, जप-तप करते हैं। मैंने भी श्रद्धा और प्यार से ये कर्म करके देखे हैं इन्हें करने से शान्ति नहीं बल्कि अहंकार आ जाता है कि मैं इतना कर्मकांडी हूँ इतना अच्छा हूँ, मेरे जैसा कौन है? ये कर्मकांड आपको रास्ते में अटका लेंगे क्योंकि पुण्यदान करने से हम स्वर्गों में ही जा सकते हैं। स्वर्ग में भी इसी तरह काम, क्रोध, मौत-पैदाईश और एक-दूसरे से ईर्ष्या है।

पुराणों में कथा आती है कि जब स्वर्ग के राजा इन्द्र के दिल में काम की आग भड़की तो उसने सूरज देवता से पूछा कि दुनिया

में कोई सुंदर स्त्री है? सूरज ने कहा कि मैं तो दिन का दीपक हूँ हर कोई मुझसे पर्दा करता है हो सकता है चंद्रमा को पता हो? चंद्रमा से पूछा तो चंद्रमा ने बताया कि गौतम ऋषि के घर अहिल्या औरत तेरे काबिल है। कामी आदमी को काम अंधा कर देता है।

गौतम ऋषि सुबह तीन बजे गंगा पर स्नान करने जाता और आकर भजन-अभ्यास में बैठ जाता था। उस समय हिन्दुस्तान में घड़ियां नहीं होती थी आमतौर पर लोग मुर्गे की बांग से ही समय का अंदाजा लगाते थे। इन्द्र ने चंद्रमा से कहा कि तू मुर्गा बनकर बाँग दे दे। चंद्रमा ने सुबह एक बजे ही बांग दे दी। बांग सुनकर गौतम ऋषि ने सोचा तीन बज गए है, वह गंगा पर स्नान करने चला गया। इन्द्र देवता ने गौतम ऋषि का रूप बदल लिया और अहिल्या के पास चला गया उसकी लड़की इंजनी को रक्षा करने के लिए बिठा दिया कि कोई बाहर से न आए।

जब गौतम ऋषि गंगा पर गया तो आवाज आई कि तेरे घर को चोर लूट रहे हैं। गौतम ऋषि ने वापिस आकर इंजनि को श्राप दिया कि तू अपनी माँ के साथ व्याभिचार कराने में मदद कर रही है, तुझ कुँवारी को बच्चा होगा। अंदर जाकर उसने अहिल्या को श्राप दिया कि तू पत्थर बन जा। तू अपने पति को छोड़कर औरों के साथ व्याभिचार करती है। चंद्रमा जो मुर्गा बना हुआ था उसे अपनी गीली धोती का पल्ला मारा तो उस पर दाग पड़ गया। आज भी जब बच्चे बुजुर्ग माता से पूछते हैं कि चंद्रमा पर दाग क्यों है? तो माताएं बताती हैं कि चंद्रमा को गौतम ऋषि ने चादर मारी थी इसलिए उस पर दाग है क्योंकि चंद्रमा ने पाप और जुल्म किया था, धोखा देने में मदद की थी। गौतम ऋषि ने इन्द्र से कहा कि तेरे शरीर पर कोढ़ हो जाए, तूने काम की खातिर मेरे घर को तबाह किया है।

सोचकर देखें! अगर स्वर्गों में काम की इतनी आग न भड़कती तो इन्द्र देवता गौतम ऋषि से श्राप क्यों लेता? सन्त-महात्मा कहते हैं कि आपने स्वर्गों की असलियत को नहीं समझा। क्या आपने ऐसे स्वर्ग प्राप्त करने हैं जहाँ इस तरह की अशान्ति है?

जब लग सतगुरु मिले न पूरे पड़े रहोगे अग में।

आप कहते हैं कि जब तक पूरे गुरु नहीं मिलते तब तक हम कभी भी काल के पिंजरे से ऊपर नहीं जा सकते। अब सवाल उठता है कि हमें पूरे गुरु मिल गए हैं नाम मिल गया है तो हमारी सुरत ऊपर क्यों नहीं जाती? हमें सोचना है! हमारे अंदर क्या नुख्स हैं?

सन्त-महात्मा मोटे-मोटे पाँच नुख्स-काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार बयान करते हैं जिनमें से काम और क्रोध ज्यादा ताकतवर है। ये हमारी आत्मा को जबरदस्ती नीचे खींचते हैं। काम इंसान को जानवर बनाकर रख देता है, बुरे-बुरे कर्म करवा देता है। जब किसी औरत की संगत-सोहबत में जाते हैं तो पता लगता है कि यह मन क्या करता है। गुरु नानक साहब कहते हैं:

जब ऐह रस आवे तब ओह न रहावे।

रस एक ही मिलेगा चाहे आप विषय-विकारों का रस लें! चाहे नाम का रस लें! अगर हम नाम का रस प्राप्त कर लेंगे तो भूलकर भी हमारा मन इन रसों की तरफ नहीं जाएगा। मैं आपको हमेशा कहा करता हूँ, ''अंदर के शब्द-गुरु को कोई बुद्धु नहीं बना सकता। वह आपके अंदर बैठकर आपकी हर हरकत को देख रहा है। आप सोचते बाद में हैं वह सुन पहले लेता है। आप जो कुछ कर रहे हैं वह उसे देख रहा है, वह दोनों हाथों से दात लुटाने के लिए तैयार है लेकिन हम लेने के लिए कितने तैयार हैं?''

नाम सुधा रस कभी न पाओ भ्रमों जोनि खग में।
पंडित काजी भेख शेख सब अटक रहे डग डग में।

आप कहते हैं, ''हम लोग आमतौर पर धार्मिक ठेकेदारों को पूजते हैं, इन पर भरोसा करते हैं लेकिन इनमें भ्रम होने की वजह से ये कदम-कदम पर रूकते हैं, इन्हें मानने वाले भी भ्रम में पड़ जाते हैं। इन्हें पता नहीं कि **परमात्मा हमारे अंदर है** हमें उससे मिलना चाहिए।''

मैं बताया करता हूँ कि मेरी माता हमारे गांव के गुरुद्वारे के भाई को बहुत मानती थी। उसकी श्रद्धा थी कि गुरुग्रन्थ भगवान है गुरुग्रन्थ की पूजा करने वाला भगवान का वजीर है। मेरी माता प्रशाद के लिए खुद चक्की से आटा पीसती थी। भाई को दही और मक्खन देती थी। मेरी माता ने भाई की बहुत साल सेवा की। भाई ने यह सोचा कि यह औरत काफी बड़े परिवार की है अगर यह मर जाए तो इसके भोग पर आखिरी क्रियाक्रम पर रिवाज के मुताबिक हर आदमी एक-एक रूपया देगा तो बहुत सारे रूपये हो जाएंगे।

भाई ने एक दिन मेरी माता से कहा, ''मैं सोचता हूँ अगर तू मर जाए तो मुझे पाँच छह सौ रूपये मिल सकते हैं।'' माता ने कहा, ''मैं तो तुझसे मुक्ति प्राप्त करना चाहती थी लेकिन तू यह आशा मत रख, मैं वायदे के साथ कहती हूँ कि मैं तुझसे पहले नहीं मरूंगी तेरे बाद ही मरूंगी।'' यह सच्चाई है कि वह गुरुद्वारे का भाई एक दिन पहले मरा, मेरी माता उसके एक दिन बाद मरी थी।

एक बार की बात है बचपन में मैं बीमार हो गया। तब तक मेरे पिता का गुरुद्वारे वालों से विश्वास उठ चुका था। मेरे पिता ने मन्नत मानी कि मेरा बेटा ठीक हो जाए हम पंडितों को खाना

खिलाएंगे। मेरे पिता को बताया गया कि अगर पंडित को कंधे पर बिठाकर घर लाएं, झूले में झुलाएं तो ज्यादा पुण्य लगेगा। पिताजी उसे कंधे पर उठाकर घर लाए, उसे झूले में झुलाया गया। खीर बनाई गई। पंडित घर में बैठा देख रहा था कि इनकी गाय दूध देने वाली है। उसने गाय माँग ली और कहा कि गाय को चरने के लिए कुछ दाने भी दें। मेरे पिता जी हाँ-हाँ करते गए। उनका ख्याल था कि मेरा बच्चा बच गया है, मैं जो कुछ भी दे दूँ कम है।

पंडित लोग खीर खाने के बाद दाँत घिसाई भी माँगते हैं। मालिक की मौज मेरा पिता सवा रूपये दाँत घिसाई देना भूल गया। पंडित ने आँगन में जाकर मुँह में उंगली डालकर खीर बाहर निकाल दी। मेरे पिता जी बहुत भ्रम में होते थे। उन्होंने मेरी माता से गुस्से में कहा, ''तूने निर्मल मन से खीर नहीं बनाई इसलिए खीर पंडित के अंदर नहीं रही, अपना दान-पुण्य नहीं लगा।''

आखिर मेरे पिताजी ने माता से कहा कि स्नान कर और हम सबको कहा कि वाहेगुरु! वाहेगुरु! कहो। हम चार पाँच भाई बहन वाहेगुरु! वाहेगुरु! कहने लगे। माता ने फिर खीर बनाई, पंडित ने खाई। पिताजी ने उसे सवा रूपये की बजाय सवा पांच रूपये दाँत घिसाई दी, पंडित को खीर पच गई; सवाल तो पैसे का था।

एक साल बाद किसी ने उस पंडित को दाँत घिसाई कम दी तो पंडित ने कहा कि लालसिंह ने मुझे दांत घिसाई नहीं दी थी तो मैंने खीर बाहर निकालकर सवा रूपये की बजाय सवा पाँच रूपये लिए थे। उस आदमी ने यह बात पिता जी को बताई। फिर पिता जी ने किसी पंडित को घर में घुसने नहीं दिया। जो लोगों की पूजा खाकर गुजारा करते हैं उसका आत्मा के ऊपर अच्छा असर नहीं होता।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो किसी का खाता है वह उसका कर्जा ऊँट बनकर उतारेगा या बैल बनकर कमाकर देगा। अगर साधु किसी का खाता है तो वह पाँच घंटे भजन करे तब उसका कर्जा उतरेगा। यह ख्याल रखें! आप जिसका खाएंगे उसका अवश्य देना पड़ेगा।''

सन्त-महात्मा पूजा खाने के मामले में बहुत सख्त होते हैं। वे अपनी कमाई में से लंगर में डालते हैं। अपने सेवक का धन लंगर में लगा देंगे या उस धन से किसी यतीम बीमार की मदद कर देंगे।

इनके संग पिया नहीं मिलना पिया मिले कोई साध समग में।।

आप कहते हैं, ''जिनका रोजगार ही किसी से माँगकर खाना है क्या उनकी सोहबत करके आपको परमात्मा मिल जाएगा? **परमात्मा आपके अंदर है**। आप किसी ऐसे महात्मा से मिलें जो दस नाखूनों से रोजी-रोटी कमाकर हमारी सेवा करता है।''

हमारे राजस्थान का इलाका काफी पिछड़ा हुआ था। वे लोग अभी भी जीवित हैं जिन्हें परम पिता कृपाल ने मेरे द्वारा धन देकर मदद की थी। सन्त अपने सेवक का धन किसी गरीब को दिलवाकर उसका धन सफल कर देते हैं।

ये तो भूले बिखे बास में भ्रम धसे इनकी रग रग में।
बिना सन्त कोई भेद न पावे वे तोहे कहे अलग में।
जब लग सन्त मिले न तुमको खाए ठगोरी तुम इन ठग में।
राधास्वामी शरण गहो तो रलो जोत जगमग में।

***

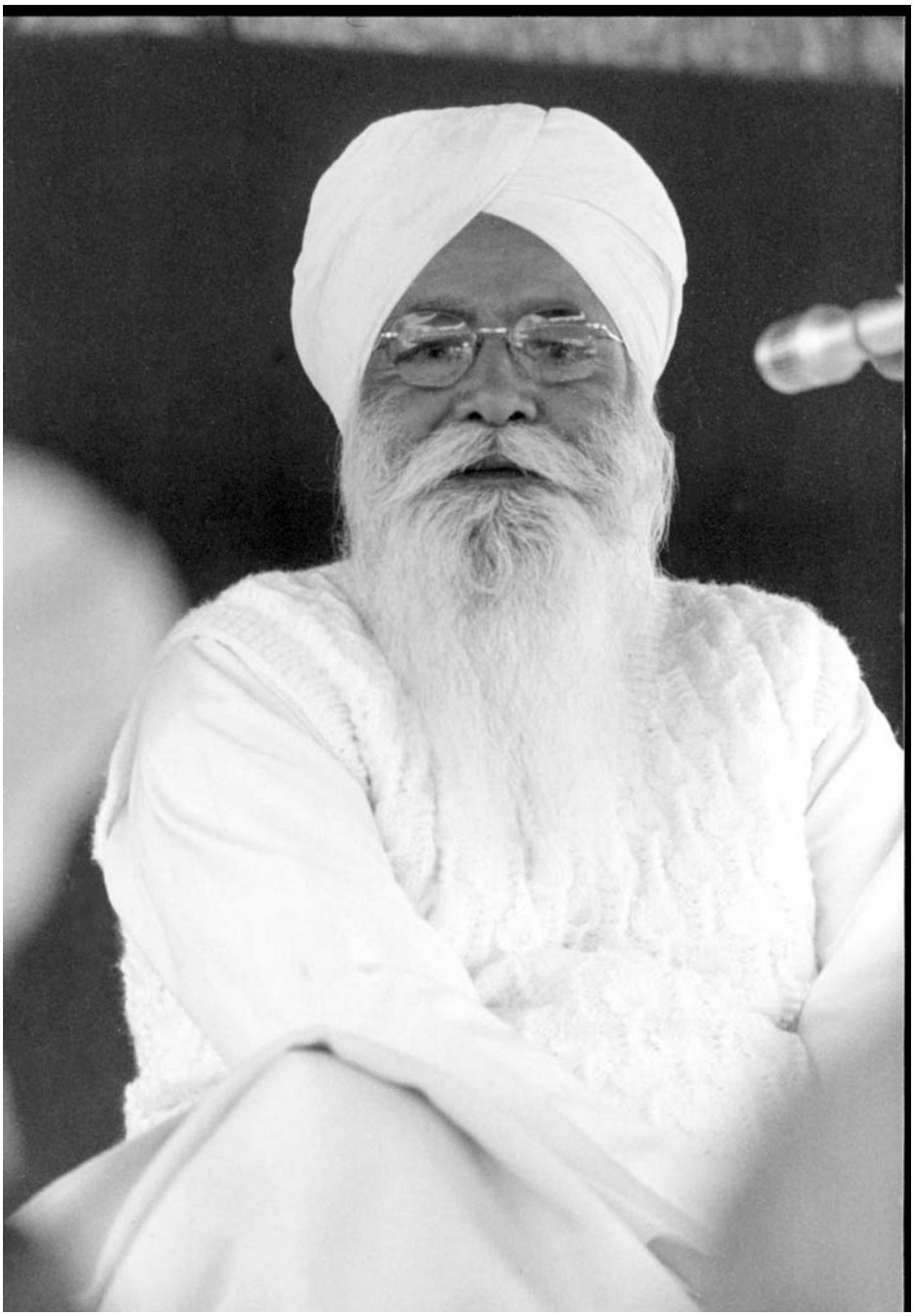

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *इस दुनिया के बाद आपके साथ हमारा क्या संबध होगा? हममें से कुछ लोग जो अभ्यास में इतनी तरक्की नहीं कर सके या आपके प्रति इतना प्यार नहीं बना सके वे इस दुनिया से चले जाने के बाद आपके या महाराज कृपाल के साथ अंतर में किस तरह का संबध बनाएंगे? क्या वहाँ भी इस तरह की जगह हैं कि कुछ लोग आश्रमों में और कुछ लोग परिवारों में रहेंगे वहाँ हम किस तरह अपना समय बिताएंगे?*

बाबाजी: यह बड़ा अच्छा और दिलचस्प सवाल है, सभी प्रेमी गौर से सुनें। इस संसार में सन्तों का मिशन उन्हीं रुहों को नामदान देने का होता है जिनका फैसला परमात्मा की तरफ से हो चुका है कि अब यह मेरे चरणों में मेरे पास पहुँच जाएं। सन्त यह भी बताते हैं कि एक महात्मा का सेवक के लिए दूर या नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर सन्त हमें नाम देने के बाद उसी समय चोला छोड़ जाएं तो सेवक की तरक्की उनके जाने के बाद भी जारी रहती है, इसमें शक की कोई गुंजाईश नहीं।

महाराज सावन सिंह जी इस बारे में एक कहानी सुनाया करते थे। हजूर सालिग्राम के समय में उनकी सेवा में एक बाप और बेटा रहते थे। जब बेटा चोला छोड़ने लगा तो बाप रोकर कहने लगा, ''तू मेरा एक ही बेटा है और तू चोला छोड़ रहा है।'' बेटे ने कहा, ''तू रो मत, मुझे पिछले जन्म का ज्ञान है, मैं मरने नहीं लगा जीने लगा हूँ। मैं पिछले जन्म में एक कीकर का पेड़ था। किसी ने मेरी दातुन लाकर स्वामी जी को दे दी। मैं जब कमाई वाले

महात्मा की रसना पर चढ़ा तो मैं कीकर की योनि में से एकदम इंसान की योनि में आया लेकिन मेरी बुद्धि जड़ ही रही। मैं गुरुमत को पूरी तरह नहीं समझ सका अब मेरा अगला जन्म पूरे इंसान का होगा। मैं गुरु को पहचान लूँगा और अच्छी कमाई भी करूँगा।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग यह कहते हैं कि हम गुरु के पास जाते हैं या हमने गुरु को ढूँढ़ लिया है वे अभी अंदर नहीं गए। जो अंदर जाते हैं वे कहते हैं कि कोई ताकत हमें सतसंग में गुरु के पास लेकर जाती है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अन्धे की ताकत नहीं कि सुजाखे को पकड़ ले। सुजाखा अन्धे को आवाज देकर उसे अपनी ऊँगली पकड़वाता है। जीव अन्धा है। परमात्मा रुप गुरु सुजाखा है, वह अपनी पहचान देता है, अपनी आत्माओं को ढूँढ़ता है।''

ऐसे वाक्यात महाराज सावन सिंह जी के समय में भी होते थे। लोग बहुत दूर से आकर कहते थे कि हमें आपके दर्शन हुए आपने हमें अपनी जानकारी दी और अपने आश्रम के बारे में बताया। ऐसा ही महाराज कृपाल के समय में भी होता रहा।

मैं जब पहले दूर पर सन्तबानी आश्रम गया वहाँ एक प्रेमी हवाई जहाज पर काफी दूर से आया। उसने कहा, ''मुझे रात को अंदर आपके दर्शन हुए और आपकी जानकारी मिली।'' अब वह अच्छा अभ्यासी है उसे नाम मिला हुआ है।

इसी तरह कीटो का एक वाक्या है। एक महिला उसी महीने की सन्तबानी मैगजीन लेकर आई कि मुझे अंदर इसी तरह के दर्शन हुए हैं। अगले दिन उसने नामदान प्राप्त किया। अब आप ही सोचें! कौन हमारा चुनाव करता है और कौन हमें ढूँढ़ता है?

महाराज सावन सिंह जी ने बाईस साल खोज़ की लेकिन बाबा जयमल सिंह जी ने अपने आश्रम से काफी दूर जाकर आपकी खोज की। इसी तरह महाराज कृपाल की खोज बाबा सावन सिंह जी ने खुद ही की थी। महाराज सावन सिंह जी सात साल पहले अंदर ही महाराज कृपाल को दर्शन देते रहे। इसी तरह महाराज कृपाल ने खुद मेरी खोज की। आप एक साल पहले मेरे अंदर स्वामी जी के रुप में आते रहे और आखिरी दिनों में जब मिलाप होना था तो महाराज जी अपने असली रुप में आए।

मुझे जिन्दगी में न तो कोई महाराज कृपाल की प्रशंसा करने वाला मिला और न ही कोई आपकी निन्दा करने वाला मिला क्योंकि मैं तो 'दो-शब्द' का अभ्यास कर रहा था। जब आपको मंजूर हुआ समय आया तो आपने मुझे खुद ही ढूँढ़ लिया।

मैं सदा महाराज सावन और महाराज कृपाल का वाक बताया करता हूँ कि परमात्मा ने सतसंगी के संसार छोड़ने का फैसला गुरु के हाथ में दिया होता है कि इसे दोबारा संसार में भेजना है या नहीं? या इसकी कमी ऊपर के मण्डलों में ही पूरी करवानी है। जिस गुरु ने हमें नाम दिया है यह फैसला उसके हाथ में होता है।

स्वामी जी महाराज ने अपनी पवित्र लेखनी में लिखा है कि गुरु सेवक को चार जन्मों में मुक्त कर देता है लेकिन महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु की ज्यादा से ज्यादा कोशिश होती है कि वह सेवक के चार जन्मों का लेखा-जोखा एक ही जन्म में पूरा करवा दे क्योंकि गुरु नहीं चाहता कि मेरे सेवक इस दुनिया में चक्कर लगाते रहें, बार-बार आकर परेशान हों। अगर लैम्प के पुर्जे ठीक-ठाक हों, बत्ती तैयार हो उसमें तेल भी डाला हो तो सिर्फ माचिस लगाने की जरूरत है लैम्प फौरन जल जाता है।''

मैंने आपको इतनी उदाहरणें इसलिए दी हैं कि सवालकर्ता ने जो सवाल किया है वह आपको आसानी से समझ आ जाए। सभी सन्तों ने इस काल की नगरी को *दुखों का घर, परेशानियों और मौत-पैदाईश का देश* कहा है। आप देखें! काल ने माता-पिता, पति-पत्नी और भाई-भाई के झगड़े खड़े किए हुए हैं। एक मुल्क़ दूसरे मुल्क़ पर तोप, बम लैस करके बैठा है फिर हम इस नगरी को किस तरह सुखों की नगरी, शान्ति का देश कह सकते हैं?

सबसे पहले इस शरीर की क्रिया की तरफ देखें! अगर हम एक दिन खाना न खाएं तो हम चल नहीं सकते, हमारे प्राण अन्न में हैं। हम कितना पवित्र खाना बनाकर खाते हैं जो अंदर जाकर गंद के रुप में बाहर निकलता है। हम इस शरीर की क्रिया में भी कामयाब नहीं कभी शरीर को कोई समस्या है तो कभी कोई। कभी बीमारी आकर शरीर को बिगाड़ देती है। कभी हमें बेरोजगारी भुगतनी पड़ती है। फरीद साहब कहते हैं:

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खा के तड़के फेर खड़ी।

सन्त-सतगुरु कभी-कभी प्रेमी को सीधा नहीं बुलाते किसी सतसंगी को जरिया बना लेते हैं लेकिन उसके पीछे भी गुरु की प्रेरणा होती है। प्यारेयो! अगर एक बार आदमी जेल चला जाए वहाँ की सख्त मुशक्कत भुगत ले तो क्या उसका दिल करेगा कि वह दोबारा वहाँ जाए? अच्छा इन्सान कभी दोबारा जेल में जाने की नहीं सोचेगा। उसकी यही कोशिश होगी कि मैं अच्छा इंसान बनकर प्यार और शान्ति की जिन्दगी व्यतीत करूँ।

बुल्लेशाह जब आत्मा से सारे पर्दे उतारकर अंदर गया तो पहुँची हुई आत्माएं उससे पूछने लगी, ''कैसे है? यहाँ आकर खुश

है सुखी है? वहाँ से क्या कमाकर लाया है?'' बुल्लेशाह अपनी लेखनी में चेतावनी देते हैं:

बुल्ला रंग महल्ली जा चढ़या, लोग पूछन आए खैर।
असी ऐह कुछ जग तो खटया, मुँह काला नीले पैर।

हम अपनी आँखों से अपने साथियों को इस संसार से जाते हुए देखते हैं। इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और मुट्ठी खोलकर चला जाता है। जब हमें अंदर जाने का मौका मिलेगा तो पहुँची हुई आत्माएं और गुरु ने वहाँ जरूर मिलना है इसमें कोई शक नहीं अगर वहाँ हमसे ऐसा सवाल किया जाए कि क्या कमाकर लाए हो? क्या वहाँ पत्नी अपना पति या पति अपनी पत्नी दिखा सकेगा? क्या हम वहाँ इस दुनिया का कोई मसाला या आश्रम दिखा सकेंगे? हमने सब कुछ यहीं छोड़कर चले जाना है। यह शरीर भी यहीं रह जाएगा, यह एक किराए का पराया मकान है।

प्यारेयो! हम सतसंगियों को यहाँ की परेशानियों का पता है क्योंकि हमें संघर्ष करना पड़ता है अगर कोई हमसे यह पूछे क्या आप यहाँ खुश हैं? तो सब यही कहेंगे, ''नहीं।'' किसी को कोई समस्या है तो किसी को कोई है। यह शरीर बीमारियों का खोल है पुराना हो जाए तो हिल भी नहीं सकता। बुढ़ापे में आकर यह शरीर जवाब दे जाता है अगर हमारे निज घर, सचखण्ड में ऐसे झगड़े हों तो वहाँ जाने का क्या फायदा?

सन्त हमें नाम के परों में बिठाकर उड़ान भरना चाहते हैं। सन्त हमें उस घर का संदेश देते हैं उस घर में ले जाना चाहते हैं, जहाँ मौत नहीं पैदाइश नहीं, परिवार या आश्रम के झगड़े नहीं। आप वहाँ शान्ति से रह सकते हैं। वहाँ आत्मा दूसरी आत्मा को आसानी से पहचान लेती है इसमें कोई शक की बात नहीं। वहाँ

आत्मा को खान-पान भी दृष्टि के सहारे मिलता है, वहाँ आत्माएं गुरु परमात्मा के दर्शन के सहारे ही रहती है।

कबीर साहब कहते हैं, ''परमात्मा की मंजिल आरामदायक है। वहाँ कोई किसी को दुख नहीं देता, कोई किसी को देखकर ईर्ष्या नहीं करता। वहाँ मैं-मेरी की बदबू नहीं प्यार ही प्यार है, वह प्यार का देश है।

प्यारेयो! गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हमने जहाँ जाना है वहाँ न हमारी देह जाएगी न ही हमारी जाति जाएगी तो हम दुनिया का सामान कैसे लेकर जा सकते हैं, वहाँ केवल हमारे अमल ही साथ होंगे। हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं तो गुरु हमें परमात्मा के देश ले जाता है अगर नाम की कमाई नहीं करते, बुरे कर्म करते हैं तो आगे जाकर हमें उन्हीं कर्मों का लेखा-जोखा देना पड़ता है। गुरु अर्जुनदेव जी इसे सुखमनी साहब में इस तरह ब्यान करते हैं :

ज्यों जल में जल आए खटाना, त्यों ज्योति संग मिल जोत समाना।

नूर में नूर मिल जाता है। प्रकाश में प्रकाश मिल जाता है। कतरा समुद्र में मिल जाता है। नमक की पुतली पानी में मिलकर पानी ही बन जाती है। कौन आकर बताए कि वहाँ ये सुख हैं? सन्त हमें इशारों से बताते हैं कि वह शान्ति का देश है।

16 पी.एस.आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

07 से 11 सितम्बर - 2013

25 से 27 अक्टूबर - 2013

22 से 24 नवम्बर- 2013

27 से 29 दिसम्बर- 2013